

जपु साहब में युगलसरकार

प्रश्न-श्रीस्वामीजी आप फरमाते हैं कि गुरुनानक देवजी महाराज श्रीजनकजी के अवतार हैं । उन्होंने तो जपुजी साहब में ज्ञान का ही कथन किया है ?

उत्तर-जपुजी साहब में श्रीगुरुनानकदेवजी ने भक्ति रस का ही निरूपण किया है । वे महाराज श्रीजनक के अवतार हैं, इस लिए भक्ति रस के ज्ञाता हैं । वह समय मधुर भक्ति के प्रचार का नहीं था इसलिए गुप्त रूप से वर्णन किया है । सोलहवीं पौड़ी (सौपान) के इन वचनों में श्रीगुरुनानकदेवजी ने श्रीगुरुअंगदसाहब के प्रति श्रीरामपञ्चायतन का निरूपण किया है-

पंच परवाण पंच परधान ।

पंचे पावहिं दरगहि मान ॥

पंचे सोहहि दरि राजान ।

पंचे का गुरु एक ध्यान ॥

पंच अर्थात् श्रीरामपञ्चायतन, श्रीजानकी, श्रीरामचन्द्र, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न ।

परवाण अर्थात् मायाकृत स्वभाव से भरे हैं ।

पञ्च परधान-यह पञ्चायतन धान्य प्रकृति याने अन्न प्रकृति से परे है । अजन्मा एवं अविनाशी होने के कारण रज, वीर्य, भूख-प्यास से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है ।

पञ्चे पावहिं दरगहि मान-मान अर्थात् यश । कीर्ति

रूप द्वार का आश्रय ग्रहण करके इस पञ्चायतन को प्राप्त कर सकेंगे ।

पञ्चे सोहहिं दरि राजान-राजाधिराज श्रीरामचन्द्र के दरबार में पाँच रस के भक्त शोभा पाते हैं ।

पञ्चे का गुरु एक ध्यान-इन श्रृंगार आदि पाँच रसों का गुरु एकमात्र ध्यान है । ध्यान माने प्यार की नजर । जैसे अपने बच्चे को हिंडोले पर पौढ़ाकर घर के काम-काज में लगी रहने पर भी माता का ध्यान बालक में है । प्रेममूर्ति श्रीरतिवन्ती देवी घर-लीप रहीं थीं । कथा में नहीं जा सकीं । उनका पुत्र कथा सुनकर रोता हुआ आया । मैया ने पूछा-बेटा क्यों रो रहे हो ? बालक ने कहा-‘माखन चुराने के कारण मैया यशोदा ने मैया कन्हैया को ऊखल से बाँध दिया है और हाथ में छड़ी ले धमका रही हैं ।’ यह सुनकर रतिवन्ती के प्राण व्यथित होकर बाहर निकल गये और तत्क्षण गोलोक में पहुँच गये । बेतार के तार से शीघ्र रतिवन्ती वहाँ पहुँचकर यशोदा मैया के हाथ से छड़ी छीनकर जोश में भर ऊखल सहित कन्हैया को लेकर निकुंज महल में चली गयी । वह अनन्त कल्पों तक यह सुख देखती रहेगी । पाँच रसों के आचार्य श्रीगुरुनानकदेवजी इसी ध्यान को कहते हैं ।

श्रीगुरुसाहब ने जपुजी साहब की सैंतीसवीं पौड़ी में तो स्पष्ट साकेतलोक का वर्णन किया है और युगलसरकार का नाम भी दिया है--

करम खण्ड की वाणी जोर ।

तित्थे होर न कोई होर ॥

करम खण्ड अर्थात् कृपाखण्ड साकेतलोक की वाणी बलवती है । बल माने प्रेम । वहाँ ऊपर की पौड़ियों में कथित ज्ञान और धर्म नहीं हैं । प्रेम ही प्रेम है । श्रीगुरुसाहब ने साकेत लोक को कृपाखण्ड इसलिये कहा है कि वह भक्तों को प्रभु की कृपा से ही प्राप्त होता है ।

तित्थे जोध महाबल सूर ।

तिन महिं राम रह्या भरपूर ॥

उस कृपाखण्ड में योधा माने विकार विजयी नवधा भक्ति करने वाले साधनसिद्ध भक्त । महाबल माने प्रेमलक्षणा भक्ति से भरपूर और सूर माने पराभक्ति से युक्त भक्त निवास करते हैं । उनके हृदय कमल में प्रभु श्रीरामचन्द्र स्थित हैं ।

तित्थे सीतो सीता महिमा माहिं ।

ताके रूप न कथने जाहिं ॥

उस लोक की अधीश्वरी शीतल स्वभाववाली स्वामिनी श्रीसीता महारानी हैं । वे अपनी महिमा में स्थित हैं । उनके रूप गुण की महिमा कथन नहीं की जा सकती ।